RESEARCH FRONT

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

अनुवाद की उपयोगिता

किर्दत संदीप जोतिराम
हिंदी विभाग,
कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, हुपरी,
तहसील–हातकणंगले, जिला–कोल्हापुर.

प्रस्तावना :

आज का युग विज्ञान–तंत्रज्ञान का युग है। ज्ञान, विज्ञान तथा तंत्रज्ञान के अविश्वसनीय विस्तार ने दुनिया का चेहरा परिवर्तित हुआ है और हो भी रहा है। इस युग में दिनोंदिन आदान–प्रदान की संस्कृति भी बढ. रही है। आदान–प्रदान संस्कृति में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है–अनुवाद। एक विशेष देश की विशिष्ट क्षेत्र की उन्नति या अधोगति का परिचय दूसरे देश के निवासियों को तभी हो सकता है जब जानकारी उसके सामने उसकी भाषा में आ सके। अनुवाद के द्वारा यह कार्य सुचारू रूप से संपन्न होता है। कहना गलत नहीं होगा कि आधुनिक युग में अनुवाद की उपयोगिता एवं उसका क्षेत्र निरंतर व्यापक हो रहा है। साहित्यिक ही नहीं बल्कि साहित्येत्तर क्षेत्र में भी अनुवाद का उपयोगीतामूल्य अक्षुण्ण है।

अनुवाद : अर्थ, परिभाषा :

अनुवाद का व्युत्पत्तिमूलक अर्थ–पुन:कथन है। 'वद' धातु में 'अनु' उपसर्ग जोडकर अनुवाद शब्द बना है। 'वद्' का अर्थ बोलना या कहना; तो अनु का अर्थ बाद का या पीछे का। अर्थात एक बार कहे जाने के बाद जो पीछे से कहा जाए वह अनुवाद है। अनुवाद के लिए विभिन्न भाषा में अलग–अलग शब्द प्रयुक्त हैं – जैसे; अंग्रेजी में ज्तंदेसंजपवद, कश्मिरी में 'तर्जमा', मराठी में 'भाषांतर', मलयालम में 'विवर्तन', तमिल में 'योषिपेयर्त्यु', तेलगु में 'अनुवादम्', उर्दू में 'तर्जया', संस्कृत में 'छाया', 'टीका' तथा 'धाखा' शब्द। नालंदा विशाल शब्दसागर में अनुवाद के अर्थ हैं– ''भाषांतर उलथा, तर्जुमा, पुनरूकित, दोहराना, पुनरूल्लेख, मीमांसा में किसी विधि प्राप्त आशय को दूसरे शब्दों में दोहराना।''[१] तो हिंदी शब्दकोश में अनुवाद का अर्थ – ''भाषांतर, रूपांतर, समर्थन, दुहराना''[२] दिया है। अनुवाद का स्वरूप अवगत होने के लिए ये कोशीय अर्थ उपयोगीसिद्ध हैं। साथ ही अनुवाद संबंधी विचार प्रस्तुत करनेवाले विद्वानों की धारणा भी देखना संगत होगा।

डॉ. भोलानाथ तिवारी के मतानुसार ''एक भाषा में व्यक्त विचारों की यथासंभव समान और सहज अभिव्यक्ति द्वारा भाषा में व्यक्त करने का प्रयास अनुवाद है।''[३] डॉ. तिवारी की परिभाषा अनुवाद की सरंचना और लक्ष्य स्पष्ट करती है। डॉ. रमेशचंद्र त्रिपाठी के मतानुसार – ''अनुवाद किसी एक भाषा में प्रयुक्त लिखित अथवा मौखिक विचारों या भावों का दूसरी भाषा में सहजता, समतुल्यता, निकटता बनाए हुए यथासंभव समान भाव से लिखित एवं मौखिक रूप में किए गए भाषांतरण की प्रक्रिया है।''[४] तो डॉ. अर्जुन चव्हाण अनुवाद को परिभाषा में बॉधते समय लिखते हैं – ''स्त्रोत भाषा की सामग्री की लक्ष्य भाषा में यथावत् अभिव्यक्ति अनुवाद है।''[५] स्पष्ट है भारतीय विद्वानों ने अनुवाद संबंधी चिंतन करते हुए स्त्रोत भाषा के भाव, विचार एवं शैली एवं सरंचना पर बल दिया है।

पाश्चात्य विद्वान डॉ. नायडा, कॅटफोर्ड, डॉ. स्मिथ, फारस्टन तथा निडा जैसे विद्वानों ने भी अनुवाद की परिभाषा की हैं। डॉ. कॅटफोर्ड ने व्यक्त की हुई धारणा दृष्टव्य है – ष्ज्तंदेसंजपवद पे जीम तमचसंबमउमदज वि जमगजनंस उंजमतपंस तिवउ वदम संदहनंहम ;वनतबम संदहनंहमद्ध इल मुनपअंसमदज जमगजनंस उंजमतपंस पद ंदवजीमत संदहनंहमष्[६] अर्थात अनुवाद स्त्रोत भाषा की पाठ सामग्री को लक्ष्य भाषा के समानार्थी पाठ में समतुल्यता की प्रतिस्थापना अनुवाद हैं।

अनुवाद शब्द के व्युत्पत्तिमूलक अर्थ, कोशीय अर्थ तथा भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों की धारणा का अनुशीलन करने पर अनुवाद से तात्पर्य है– किसी एक भाषा की सामग्री को उसके भाव, विचार एवं शैली के साथ दुसरी भाषा में अभिव्यक्ति देना।

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

अनुवाद की उपयोगिता :

यह बात सर्वसामान्य हो रही है कि, वर्तमान में अपने चारों ओर की दुनिया से संपर्कित रहने की प्रवृत्ति मनुष्य का स्थायीभाव बन रही है। संपर्क का प्रमुख माध्यम भाषा है। चाहे उसका रूप लिखित हो या मौखिक। पर दुनिया में भाषाओं की तादायत अधिक है। परिणामत: एक भाषा की सूचनाओं का पारस्परिक आदान–प्रदान होना आवश्यक होता है। इस कार्य में अनुवाद महज भूमिका निभाता है। इस संदर्भ में डॉ. बालेन्दुशेखर तिवारी का कथन दृष्टव्य है – ''संसार भर में प्रयुक्त पॉच हजार से अधिक भाषाओं और बोलियों के बीच वैचारिक, सृजनात्मक और कार्यात्मक तालमेल स्थापित रखने के लिए अनुवाद ही सर्वाधिक लोकप्रिय एवं उपयोगी माध्यम बन गया है।''[७] स्पष्ट है कि विभिन्न क्षेत्रों में अनुवाद की उपयोगिता अक्षुण्ण है। उपयोगिता के संदर्भ भले अलग हैं पर कुल मिलाकर विश्वकल्याण, मानवकल्याण ही अनुवाद कार्य का उद्देश्य है। निम्नलिखित दृष्टि से अनुवाद की उपयोगिता अधोरेखित होती है–

राष्ट्रीय एकता को संबलता :

देश को एकता के सूत्र में पिरो देनेवाली कई इकाइयों में से एक अनुवाद है। विभिन्न भाषा भाषियों के बीच संपर्क स्थापित होने के लिए जिस तरह प्रांतीय भाषा की सूचना–सामग्री का राजभाषा, राष्ट्रभाषा में अनुवाद होना अपेक्षित होता है। उसी तरह राजभाषा, राष्ट्रभाषा सामग्री का प्रांतीय भाषा में अनुवाद होना आवश्यक होता है। ताकि भाषा, प्रांत, वेशभूषा तथा संस्कृति जैसी इकाइयों में होनेवाली विभिन्नता के कारण आई भावात्मक, अनुरागात्मक विभिन्नता दूर होने की संभावना रहती है। इस संदर्भ में डॉ. अजय प्रकाश का कथन दृष्टव्य है– ''राष्ट्रीय एकता के मार्ग में सबसे बडी बाधा यही भाषागत वैविध्य तथा भाषागत विद्वेष है। अनुवाद के द्वारा राष्ट्रीय एकता की इस बाधा को दूर किया जा सकता है।''[८] कहना गलत नहीं होगा कि भिन्न प्रांत के लोगों की संस्कृति, आचार–विचार, भाषागत एवं साहित्यिक सौंदर्य की पारस्परिक अनुभूति अनुवाद कार्य से ही मिलती है।

वाणिज्य–विस्तार :

भूमंडलीकरण के युग में हर एक देश अपना वाणिज्य–क्षेत्र मजबूत करना चाहता है। साथ ही अपने को अन्य देश के बाजार में स्थापित करना चाहता है। इन दोनों हेतु की पूर्ति सही मायने में तब होती है जब संबंधित वाणिज्यिक संस्था तथा समुदाय बाजार–देश की भाषा में संवाद स्थापित करता है। अत: उन्हे अनुवाद से ही कार्य सँभालना पडता है। वाणिज्य–अनुवाद के अंतर्गत मुख्यत: व्यवसाय, उद्योगधंधे, बैंक, विज्ञापन आदि क्षेत्र आते हैं। इन क्षेत्रों के लिए अंग्रेजी अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में संवाद स्थापित करने की भाषा हो तो भी व्यवसाय वृद्धि के लिए जनभाषा का प्रयोग उपयोगी सिद्ध होता है। अर्थात स्थानीय भाषा में अंग्रेजी का या वाणिज्य–संस्था की भाषा का अनुवाद अपेक्षित होता है। देशार्तगत व्यापार–विस्तार के लिए राजभाषा, राष्ट्रभाषा तथा प्रांतीय भाषा में वाणिज्यिक सामग्री का अनुवाद होते हुए नजर आते हैं। वाणिज्यिक पत्राचार, निविदाएँ, सूचनाएँ, नियमावली, निर्देश, उद्घोष तथा विज्ञापन संबंधी सामग्री वाणिज्य–अनुवाद में आती है।

विश्वपटल पर साहित्य की प्रतिस्थापना :

हर एक भाषा का अपना साहित्य–भांडार होता है। साहित्य ज्ञानात्मक हो, भावात्मक हो, परिचयात्मक हो या समाज–विज्ञान संबंधी हो उसमें विभिन्नता–समानता भी नजर आती है। यह विशेषता भाषागत, भावगत, विचारगत, शैलीगत सौंदर्यात्मकता के कारण अधोरेखित होती है। पर एक भाषा की साहित्यिक कृति अपना क्षेत्र लॉघकर तब पहुँच जाती है जब वह अन्यतम भाषा में अनुवादित होती है। आज विश्व की प्रसिद्ध कृतियॉ अनुवाद के जरिए ही अन्यान्य पाठकों तक पहुँच रही हैं। यह बात संतोषजनक है। कारण किसी भी देश के नागरिक एक दूसरे का साहित्य पढकर ही पारस्परिक वैचारिक एवं भावात्मक लगाव का अनुभव अन्य माध्यमों की अपेक्षा अधिक कर सकते हैं। कुल मिलाकर साहित्यिक रचना विश्वपटल पर पहुँचाने का माध्यम अनुवाद है।

धार्मिक तत्त्वों का प्रचार–प्रसार :

विश्व में हर धर्म की अपनी एक भाषा दृष्टिगोचर होती है। जैसे; हिंदू धर्म–संस्कृत, ईसाई–लैटिन, मुस्लिम–उर्दू, अरबी, बौद्ध–पाली, जैन धर्म–प्राकृत आदि। किंतु विशेष धर्म के अनुयायियों को छोडकर अन्य धर्म के लोगों को उस

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

धर्म की एवं संत–महंतो का जीवन–दर्शन भी समझ में नहीं आता है। पर धर्म का प्रचार–प्रसार तथा ज्ञानविस्तार की संभावना तब बनती है जब उसका अनुवाद अन्यान्य भाषा में होता है। अतएव धर्मभाषाओं के अध्येयता धर्मग्रंथो का अनुवाद कर अपने धर्म का प्रचार–प्रसार करते हैं। जैसे ख्रिश्चन धर्म से संबंधित येशू की किताबे मराठी, हिंदी, अंग्रेजी तथा दुनिया की अनेक भाषाओं मे दिखायी देती हैं।

धार्मिक–स्थलों पर भी अनुवाद की आवश्यकता नजर आती है। भारत में देश–विदेश से आनेवाले भक्तों के साथ मंदिर के पुजारी, दुकानदार बोलचाल की हिंदी–अंग्रेजी बोलते हैं। अपने पंथ संप्रदाय, संगठन को वैश्विक रूप देने की मनिषा रखनेवाले लोग भी अनुवाद की सहायता से ही हेतुसिध्दी का प्रयास करते हैं। जैसे; रामदेव बाबा, श्री श्री रविशंकर, हरदेव बाबा अपने तत्वों का प्रचार–प्रसार करते समय दुभाषिया की सहायता से स्थानीय बोली में संवाद स्थापित करते हुए दिखाई देते हैं। विभिन्न भाषाओं में अनुवादित की हुई उनकी किताबे भी अनुवाद की उपयोगिता का प्रमाण है। दूरदर्शन पर सत्संग करानेवाले धर्मप्रचारक भी अनुवाद द्वारा ही अपने विचार प्रकट करते हैं।

शिक्षा जगत् :

शिक्षा का क्षेत्र अनुवाद के बिना अधूरा है। आज के विज्ञान तंत्रज्ञान के युग में विज्ञान, समाज–विज्ञान, अर्थशास्त्र, गणिती, वैद्यकशास्त्र, अभियांत्रिकीशास्त्र जैसे विषयों के संदर्भ–ग्रंथ अधिकत्तर अंग्रेजी भाषा में नजर आते हैं। मात्र अध्ययन की माध्यम भाषा में इन ग्रंथो का अनुवाद किए बिना ज्ञान की वृध्दि असंभव होती है। आज हर अध्ययन माध्यम–भाषा में अनुवाद अनुपलब्ध हैं, पर संबंधित देश की राष्ट्रभाषा में देश–विदेश के संदर्भ ग्रंथों का अनुवाद होता हुआ दिखाई देता है। जैसे – रूसियों को भारतीय आयुर्वेद की ज्ञानप्राप्ति करनी होती है तो वे पहले इन ग्रंथो का रूसी या अंग्रेजी में अनुवाद करेंगे और फिर ज्ञानप्राप्ति करेंगे।

न्यायपालिका का सुचारू परिचालन :

न्यायालय में भी अनुवाद की संभावना अधिक रहती है। भले वह प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में हो। विशेष रूप से किसी विदेशी का वाद न्यायालय में आता है तब आरोपी तथा प्रत्यक्ष सबूतदर्शक न्यायालय की भाषा जानेंगे ही ऐसा नहीं, तब अनुवाद द्वारा कार्य चलाया जाता है। भारतीय न्यायालय के संदर्भ में डॉ. श्रीमती आशा मोहन का कथन है – ''आज भी भारतीय अदालतों की भाषा अंग्रेजी बनी हुई है। इसमें मुकदमों के लिए आवश्यक कागजात अक्सर प्रादेशिक भाषा में होते हैं, मगर पैरवी अंग्रेजी में होती है।''[९] स्पष्ट है भारत में न्यायव्यवस्था में प्रादेशिक भाषाओं का प्रयोग भी होने लगा है। वकील अनुवादक के रूप में खुद या स्थानीय अनुवादक द्वारा न्यायाधिश और पक्षकार के बीच कार्य करते हैं। उच्च न्यायालय में तो प्रादेशिक भाषा के कागजातों का अनुवाद अंग्रेजी में करना ही पडता है।

संस्कृति और कला :

राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर क्रमश: विभिन्न प्रांतो एवं देशों के मध्य सांस्कृतिक और कलात्मक संबंध स्थापित करने में अनुवाद उपयोगी है। प्रत्येक प्रांत एवं देश की गीत, संगीत, नृत्यकला, चित्रकला, वास्तुकला, परंपरा, वेशभूषा तथा खानपान की एक विशेषता होती है। वही विशेषता अधिकाधिक लोगों तक पहुँचाने के लिए अनुवाद उपयोगी होता है। इन कला संस्कृति पर लिखे हुए ग्रंथ तो अनुवादित किये जाते हैं, पर प्रत्यक्ष रूप से ये कलायें जब प्रस्तुत की जाती हैं तब दर्शकगण/श्रोतागण जो भाषा जानते हैं, उस भाषा में संबंधित कला की जानकारी दी जाती है।

सरकारी कार्यालय :

देश–विदेश के सरकारी कार्यालय में अनुवाद की अत्याधिक आवश्यकता होती है। किसी भी देश का कारोबार उस देश की राजभाषा में चलता है पर कारोबार जिनके लिए चलाया जाता है वे (जनता) सभी राजभाषा के ज्ञानी होते ही है ऐसा नहीं। परिणामत: सरकारी पत्र, अधिसूचना, कार्यालय आदेश, शासनादेश, परिपत्र, कार्यालय ज्ञापन, अनुस्मारक, गजट (राजपत्र) इन सब की विषयसामग्री जनता तक पहुँचने के लिए उसका जनभाषा में मौखिक एवं लिखित रूप में अनुवाद करना पडता है। अत: सरकार के अधीन सभी विभागों, कार्यालयों में अनुवाद की आवश्यकता होती है।

संचार माध्यम की नींव: अनुवाद :

आधुनिक युग की एक उपलब्धि विभिन्न संचार माध्यम हैं। इनमें समाचारपत्र, आकाशवाणी, दूरदर्शन, इंटरनेट, ई–मेल, चलचित्र महत्त्वपूर्ण एवं लोकप्रिय संचार–माध्यम हैं। इन साधनों के जरिए विश्व के एक कोने की खबर चंद मिनिटों में दूर–दराज तक पहुँच जाती है। मात्र इन माध्यमों का सुचारू परिचालन अनुवाद से संभव है। समाचारपत्र की विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय एजेन्सियाँ अन्य देशों की भाषाओं में छपे और प्रसारित समाचार अनुदित करके अपने ग्राहकों को प्रेषित करती है। आकाशवाणी के विभिन्न केंद्रो से देश–विदेश की खबरे लगभग सभी प्रमुख भाषाओं में प्रसारित की जाती है। इन खबरों का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद तैयार किया जाता है। दूरदर्शन भी इसे अपवाद नहीं है। समाचार प्रस्तुतिकरण के चैनेल तो 'लाइव्ह कास्टींग' का सीधा अनुवाद मौखिक एवं लिखित रूप में संपर्क माध्यमों का कार्य संगणक से अधिक असान हुआ है। संगणक के कारण मशीनी अनुवाद हो रहे हैं। पाश्चात्य देशों में ॆलैज्तडए स्ळ्ढै प्रणाली तो भारत में अनुसारक, अनुवादक, मंत्र, मैट, साप्टवेअर प्रणाली विकसित हुई है, जिसकी सहायता से वर्तनी शुध्दता के साथ अनुवाद–कार्य किया जाता है।

संचार माध्यम मुद्रित हो या इलैक्टॉनिक उसमें विज्ञापन का स्थान महत्त्वपूर्ण होता है। विज्ञापन का संबंध भाषा से होता है। एक भाषा में किया विज्ञापन अन्य भाषियों तक नहीं पहुँचता। इस कारण अनुवाद से कार्य सँभालना पडता है।

अन्तर्राष्ट्रीय संबंध :

विभिन्न देशों के सभी नेतागण, प्रतिनिधि तथा अधिकारी अन्तर्राष्ट्रिय संपर्क की भाषा अंग्रेजी में सुव्यवस्थित रूप से विचार स्थापित करने की क्षमता नहीं रखते। अत: वे पारस्परिक व्यवहार के लिए दुभाषिया की सहायता लेते हैं। राजदूत भी अनुवाद का सहारा लेकर देश–देश के बीच सामंजस्य स्थापित करने का कार्य करते हैं।

निष्कर्ष :

अनुवाद से अभिप्राय है – किसी एक भाषा की सामग्री को उसके भाव, विचार एवं शैली के साथ दूसरी भाषा में अभिव्यक्ति देना। अनुवाद का उपयोगिता क्षेत्र दिनोंदिन बढ़ रहा है। उपयोगिता के संदर्भ भले अलग नजर आते हैं पर कुल मिलाकर विश्वकल्याण, मानवकल्याण ही अनुवाद का महज उद्देश्य है।

राष्ट्रीय एकता की भावना निर्माण करने में तथा विश्वपटल पर वाणिज्य विस्तार, धार्मिक तत्त्वों का प्रचार–प्रसार में अनुवाद की भूमिका अक्षुण्ण रूप में परिलक्षित होती है। अनुवाद के कारण ही विभिन्न प्रांत के लोग मानसिक, सांस्कृतिक रूप से एक दुसरे के साथ जुड सकते है। अपने धार्मिक, अध्यात्मिक संगठन को वैश्विक रूप देने की मनिषा रखनेवाले गुरूजन भी अनुवाद से अपनी कार्य सिध्दी करते हैं। न्यायपालिका की भाषा न जाननेवाले आरोपी अपने वकील तथा स्थानीय अनुवादक द्वारा अपना बयान पेश करते हैं। शिक्षा जगत् में संदर्भ ग्रंथो का अनुवाद विशेष महत्वपूर्ण है। संस्कृति तथा कला क्षेत्र को विश्व मंच प्राप्त होने की दृष्टि से अनुवाद की उपयोगिता है।

सरकारी कार्यालय के कारोबार की नींव अनुवाद है। संचार माध्यम के कारण अनुवाद में गतिशीलता आई है। संगणक की विभिन्न सॉप्टवेअर प्रणालियों के कारण अनुवाद में सटिकता, सुलभता, प्रभावात्मकता आई है। विज्ञापन क्षेत्र अनुवाद के बिना अपूर्ण है। देश–विदेश के बीच अन्तर्राष्ट्रीय संबंध सुचारू बनाने में या बिगाड देने में अनुवाद की भूमिका पर्याप्त रूप से कार्यरत दिखाई देती है।

संदर्भ संकेत :

१. सं. नवलजी – नालंदा विशाल शब्दसागर, पृ. ५६
२. डॉ. हरदेव बाहरी – हिंदी शब्दकोश, पृ. ३
३. डॉ. भोलानाथ तिवारी – अनुवाद विज्ञान, पृ. १५–१६
४. डॉ. रमेशचंद्र त्रिपाठी – प्रयोजनमूलक हिंदी : विविध परिदृश्य, पृ. ११३
५. डॉ. अर्जुन चव्हाण – अनुवाद चिंतन, पृ. ४१
6- Dr. Catford J.C. - A Linguistic Therory of Translation - Page, 35
७. सं. डॉ. बालमुकुन्द गुप्त – प्रयोजनमूलक हिंदी, पृ. १३०
८. डॉ. अजय प्रकाश, डॉ. वर्मा, डॉ. सिंह– प्रयोजनमूलक हिंदी, पृ. १४
९. डॉ. श्रीमती आशा मोहन, डॉ. शर्मा, त्रिपाठी – प्रयोजनमूलक हिंदी पृ.६